अतुल कॉमिक्स

मूल्य: ४ रु.

राजा हड़बड़सिंह • मंत्री गड़बड़सिंह





आइए, अब पढ़ें इस विचित्र जोड़ी के हंसा-हंसा कर लोटपोट कर देनेवाले कुछ मनोरंजक कारनामे...

लेखक एवं संपादक : आलोक माथुर ● चित्रकार : प्रदीप साठे

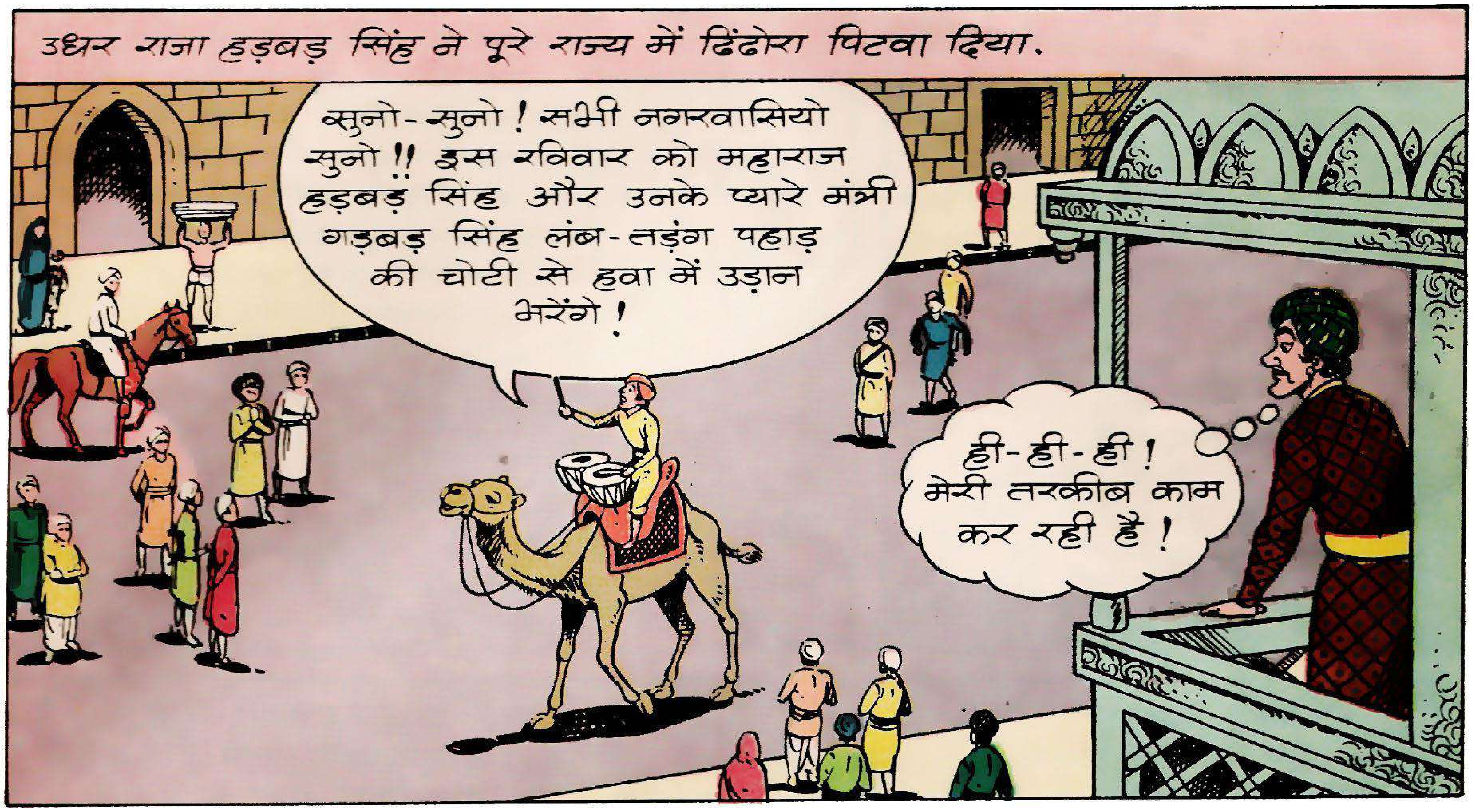
प्रकाशक : अतुल माथुर ● ● प्रसार : एस.के. माथुर


आसमान की सैर
एक दिन राजा हड़बड़ सिंह अपने प्रिय मंत्री गड़बड़ सिंह के साथ अपने महल की छत पर खड़ा था.
इतने गौर से क्या देख रहे हैं, महाराज ?
इन पक्षियों को, गड़बड़ सिंह !
इन पक्षियों में ऐसी क्या खास बात है, महाराज ?
खास बात तो कुछ भी नहीं. लेकिन जब भी हम उड़ते हुए पक्षियों को देखते हैं तो हमें उनसे जलन होने लगती है !
पक्षियों से जलन ?
?
हां ! देखो न, कितने मजे से हवा में तैरते हैं ये ! जहां मन चाहा फुर्र से उड़ कर पहुंच गये !!



भगवान ने मनुष्य के साथ कितनी बड़ी नाइंसाफी की है कि उसे पंख नहीं दिये !
काश हम भी इन पक्षियों की तरह हवा में उड़ पाते !
?
तो महाराज पक्षियों की तरह उड़ना चाहते हैं ! बहुत खूब ! इन्हें मौत के घाट उतारने का इससे बढ़िया मौका फिर नहीं मिलेगा !
महाराज, कौन कहता है कि मनुष्य पक्षियों की तरह नहीं उड़ सकता ?
क्या मतलब ? क्या हम भी पक्षियों की तरह उड़ सकते हैं ? वह कैसे ?
नकली पंख लगा कर !
सच !
तो गड़बड़ सिंह, फौरन दो जोड़ी नकली पंख तैयार करवाओ. हमारा मन आकाश में उड़ने को मचल रहा है. तुम भी हमारे साथ उड़ने चलोगे.
जो आज्ञा, महाराज !


दो दिन बाद—
लीजिए हुज़ूर, दो जोड़ी नकली पंख तैयार हैं.
बहुत खूब, कारीगर मियां! यह रहा तुम्हारा मेहनताना!
कारीगर के जाने के बाद—
हा-हा-हा-हा! महाराज भी एकदम बेवकूफ हैं. भला नकली पंख लगा कर भी कोई उड़ सकता है?
अब मैं महाराज को राज्य के सबसे ऊंचे पहाड़ की चोटी पर ले जाऊंगा और फिर...
उड़ान भरिए न, महाराज! आपके पीछे-पीछे मैं उड़ान भरता हूं!
अ-अच्छा!
ईऽऽऽ!
इतनी ऊंचाई से नीचे गिरते ही महाराज का काम तमाम हो जायेगा. महाराज के मरने के बाद मैं उड़ान भरने से इन्कार कर दूंगा. और फिर...
राजा गड़बड़ सिंह की जय!!


उधर राजा हड़बड़ सिंह ने पूरे राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया.
सुनो-सुनो! सभी नगरवासियो सुनो!! इस रविवार को महाराज हड़बड़ सिंह और उनके प्यारे मंत्री गड़बड़ सिंह लंब-तड़ंग पहाड़ की चोटी से हवा में उड़ान भरेंगे!
ही-ही-ही! मेरी तरकीब काम कर रही है!


आखिर रविवार भी आ पहुंचा. हड़बड़ सिंह अपने दो सिपाहियों और गड़बड़ सिंह के साथ लंब-तड़ंग पहाड़ की चोटी पर पहुंचा. पहाड़ के नीचे पूरा राज्य यह तमाशा देखने के लिए जमा था.
वाह! अब कुछ ही देर बाद, हवा में उड़ने का हमारा सपना सच हो जायेगा!
हमारी प्यारी प्रजा हमें उड़ान भरते देखने के लिए आयी है!


चलो गड़बड़ सिंह, पहले तुम उड़ान भरो.
धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूं, महाराज ! पहले आप ही उड़ान भरें.
क्यों ? तुम क्यों नहीं ?
अ... बात यह है महाराज कि पहले उड़ान भरने से पूरे विश्व में आपकी ख्याति फैल जायेगी. दुनिया सदा आपको 'उड़नेवाले पहले इन्सान' के रूप में याद रखेगी. इतिहास में आपका नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा जायेगा. आप अमर हो जायेंगे !
इसीलिए पहले उड़ान भर कर मैं आपसे वह यश और कीर्ति नहीं छीनना चाहता.
ओह ! गड़बड़ सिंह, तुम कितने अच्छे हो ! इतनी महत्वपूर्ण बात तो हमने सोची ही नहीं थी ! ठीक है, पहले हम ही उड़ान भरेंगे !
तभी उस रास्ते से मशहूर जादूगर पिंगपांग गुजरा.
क्यों भाई, यहां इतनी भीड़ क्यों जमा है ?
आपको नहीं मालूम ? आज राजा हड़बड़ सिंह हवा में उड़ कर दिखायेंगे. उन्होंने नकली पंख लगा रखे हैं.
हे भगवान ! अगर महाराज ने नीचे छलांग लगा दी तो उनकी हड्डियों का सुरमा बन जायेगा ! अब इतना वक्त भी नहीं है कि उन्हें यह मूर्खतापूर्ण हरकत करने से रोक सकूं ! लेकिन चाहे जो हो... मैं महाराज को मरने नहीं दूंगा !


ऊपर, पहाड़ की चोटी पर—
अच्छा, तो गड़बड़ सिंह, हम चले आसमान की सैर करने ऽऽ!
मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं, महाराज!
एक... दो... और ये ऽऽऽ... तीन...!
चलो, पिंड छूटा!
इससे पहले कि राजा हड़बड़ सिंह नीचे गिरे, जादूगर पिंगपांग ने अपनी जादुई शक्ति का इस्तेमाल किया...
...जिससे राजा हड़बड़ सिंह सचमुच हवा में उड़ने लगा.
आहा! मजे आ गये! वाह-वाह! हम हवा में उड़ रहे हैं!
?
?
?
फिर तो राजा हड़बड़ सिंह ने हवा में कई चक्कर लगाये.
सच! कितना मज़ा आ रहा है!
?
?
?
?
क-क-कहीं मेरी आंखें धोखा तो नहीं खा रहीं ?!


जी भर कर उड़ने के बाद, राजा हड़बड़ सिंह धीरे-धीरे नीचे उतर आया.
महाराज की जय!
आहा! पहुंच गये जमीन पर!!
हड़बड़ सिंह ने नकली पंख उतार कर रखे ही थे कि—
महाराज, अगर आज मैं यहां न होता तो आपकी जान चली जाती.
?
कौन हो तुम?
मैं मशहूर जादूगर पिंगपांग हूं. अभी-अभी आप मेरे ही जादू के जोर से उड़ रहे थे.
आखिर आपको नकली पंख लगा कर हवा में उड़ने का बेवकूफी भरा सुझाव दिया किसने? क्या आपको मालूम नहीं कि नकली पंख लगा कर कोई नहीं उड़ सकता?
?!
खबरदार, जबान को लगाम दो. हमारे प्रिय मंत्री गड़बड़ सिंह के खिलाफ हमारे कान भरने की कोशिश न करो.
नकली पंख लगा कर हवा में उड़ने की शानदार तरकीब हमें गड़बड़ सिंह ने ही सुझायी थी. और उसकी तरकीब कामयाब भी रही.


असल में तुम गड़बड़ सिंह से जलते हो और मुफ्त में लोगों की वाहवाही बटोरने के लिए यह साबित करना चाहते हो कि हम तुम्हारे जादू की वजह से हवा में उड़ रहे थे !
!!
य-यानी आप यह मानने को तैयार नहीं कि आप मेरे जादू के जोर से उड़ रहे थे ?!
कतई नहीं ! अब दफा हो जाओ यहां से ! हमने तुम जैसे कई मक्कार देखे हैं.
अब तो पिंगपांग को भी गुस्सा आ गया.
अच्छी बात है ! अगर ऐसा ही है तो अब आप अपने प्यारे गड़बड़ सिंह से कहिए कि वह भी हवा में उड़ कर दिखाए. अगर वह अपनेआप हवा में उड़ सका तो आप मुझे जो चाहें वह सजा दीजिएगा !
ठीक है ! और अगर वह हवा में नहीं उड़ सका तो हम मान लेंगे कि हम तुम्हारे जादू के जोर से उड़े थे.
गड़बड़ सिंह, अब तुम हवा में उड़ान भर कर दिखाओ !
न..न..नहीं !



गड़बड़ सिंह को हिचकते देख, पीछे खड़े राजा हड़बड़ सिंह के एक सिपाही ने उसकी 'मदद' की.
घबराइए नहीं, हुजूर! लीजिए, मैं आपको धकेल देता हूं!
न-नहीं!
बचाऽओ!
इस बार पिंगपांग ने अपने जादू का प्रयोग नहीं किया.
ऐं!
और...
ईऽऽ!
आऽऽऽह!
हे भगवान!
धड़ाम
आखिर राजा हड़बड़ सिंह को जादूगर पिंगपांग का लोहा मानना पड़ा.
तुम सच कह रहे थे, पिंगपांग! सचमुच, हम तुम्हारे जादू के ही जोर से उड़े थे.




* सर्वश्रेष्ठ जादूगर


डाकुओं के घेरे में
एक दिन राजा हड़बड़ सिंह अपनी बैठक में आराम कर रहा था.
अचानक —
ऐं !
राजा हड़बड़ सिंह ने छुरा निकाल कर उसमें फंसी चिट्ठी खोल कर पढ़ी—
राजा हड़बड़ सिंह, अब तू इस दुनिया में सिर्फ दो-चार दिन का ही मेहमान है! जल्दी ही मैं तुझे मौत के घाट उतार दूंगा !
तेरे खून का प्यासा, डाकू गरज सिंह
बाप रे !
सिपाहियो, देखो तो छुरे में लगी यह चिट्ठी फेंक कर कौन भागा! धर दबोचो उसे !!
जी, सरकार !


कुछ ही मिनटों में—
लीजिए महाराज, यह डाकू गरज सिंह का आदमी है.
हं sss...
तभी वहां मंत्री गड़बड़ सिंह आ पहुंचा.
क्या बात है, महाराज?
आओ, गड़बड़ सिंह! देखो, इस आदमी के हाथों डाकू गरज सिंह ने हमें जान से मारने की धमकी भिजवायी है!
अरे वाह...! डाकू गरज सिंह महाराज को जान से मारना चाहता है! फिर तो इस काम में मैं उसकी मदद करूंगा. इस तरह महाराज की हत्या का दोष भी मेरे सिर नहीं आयेगा और मैं राजा भी बन जाऊंगा!
यानी एक तीर से दो शिकार...! हा-हा-हा-हा!
पर ऊपर से—
उस चूहे की यह मजाल! डाल दो इस बदमाश को कालकोठरी में!


जेल में—
(हम्फ!हम्फ!) मार-मार कर इसका भुरता बना दिया. पर फिर भी यह पाजी डाकू गरज सिंह के अड्डे का पता बताने को तैयार नहीं!
नहीं बताऊंगा... नहीं बताऊंगा! मैंने अपने सरदार का नमक खाया है!
?
हं ऽऽऽ... मार-पीट का इस ढीठ पर कोई असर नहीं होगा...! मार खाने की तो इन चोर-डाकुओं को आदत होती है!
आहा... तरकीब!
अब तुम दोनों जाओ! मैं देखता हूं कैसे नहीं बताता!!
नहीं बताऊंगा! नहीं बताऊंगा!!
सिपाहियों के जाने के बाद—
जब तक तू मुझे गरज सिंह के अड्डे का पता नहीं बतायेगा मैं तुझे गुदगुदी करता रहूंगा.
हा-हा-हा-हा! हा-हा-हा हा!
ही-ही-ही-ही! हु-हु-हु-हु!
हो-हो-हो-हो! हो-हो-हो-हो!
हे-हे-हे-हे! हंस-हंस कर मर जाऊंगा...


...पर नहीं बताऊंगा कि गरज सिंह का अड्डा विराट जंगल के बीचो-बीच काली झील के किनारे खटारा खंडहर में है.
एकाएक उसे अपनी भूल का एहसास हुआ...
अर्र्र्र्र... यह मेरे मुंह से क्या निकल गया...!
फिक्र मत करो, मैंने कुछ भी नहीं सुना.
हे-हे-हे-हे! बस यही तो मैं मालूम करना चाहता था...
गड़बड़ सिंह फौरन महल में दाखिल हुआ.
कहो, गड़बड़ सिंह, गरज सिंह के अड्डे का पता बताया उस आदमी ने?
नहीं, महाराज! वह जान देने को तैयार है, पर उसके अड्डे का पता बताने को तैयार नहीं!
हड़बड़ सिंह का मुंह लटक गया.
अब क्या होगा, गड़बड़ सिंह?
दिल छोटा न कीजिए, महाराज! हम जल्दी ही उससे गरज सिंह के ठिकाने का पता उगलवा लेंगे और उसके पूरे गिरोह का सफाया कर देंगे. चलिए, थोड़ी देर कहीं घूम आएं. आपका जी हलका हो जायेगा.
न बाबा न...! कहीं रास्ते में डाकू गरज सिंह घात लगा कर बैठा हो तो?
कैसी बातें करते हैं, महाराज! मेरे रहते डाकू गरज सिंह आपका बाल भी बांका नहीं कर सकता.
थोड़ी देर बाद—
लेकिन हम जा कहां रहे हैं?
विराट जंगल में!


जल्दी ही, विराट जंगल में—
ब-ब-बाप रे! गड़बड़ सिंह, हम तो काफी घने जंगल में आ पहुंचे हैं.
घने जंगल में ही तो प्रकृति की असली सुंदरता बसती है, महाराज! देखिए न...
...जंगल की शोभा बढ़ानेवाले रंगबिरंगे जहरीले सांप, बिच्छू, अजगर! विषैली मकड़ियों के खूबसूरत जाले!
मोतियों की लड़ियों की तरह पेड़ों पर झूलते, खून चूसनेवाले चमगादड़!
कानों में रस घोलती हुई शेर-चीतों की गरज! गीदड़ों की हुआं-हुआं! भेड़ियों की गुर्राहट! हवा की सांय-सांय!
यहां-वहां संगमरमर के टुकड़ों की तरह बिखरे हुए नरकंकाल!
सौभाग्य के प्रतीक उल्लू!


स-स-सचमुच... ब-ब-बहुत 'खूबसूरत' नजारा है!
जल तू... जलाल तू... आयी बला को टाल तू...
जय-जय-जय हनुमान गुसाईं... कृपा करो गुरुदेव की नाईं...
महावीर जब नाम सुनावे... भूत-पिशाच निकट नहीं आवे...
काफी आगे चलने के बाद —
सामने ही नजर आ रही है काली झील... और वह रहा खटारा खंडहर...! अब महाराज को यहीं छोड़ कर चुपचाप खिसक लूं!
महाराज, आप एक मिनट यहीं ठहरिए. मैं अभी आया.
क-क-कहां जा रहे हो?
आपके लिए ताजे-मीठे फल तोड़ने!
हम भी तुम्हारे साथ चलते हैं.
नहीं महाराज, आप थक जायेंगे! मैं बस अभी गया और अभी आया. तब तक आप यहां की ताजी हवा का मजा लीजिए...! वैसे भी यहां किसी तरह का कोई खतरा नहीं!
?
थोड़ी दूर जाने के बाद गड़बड़ सिंह आम के एक ऊंचे पेड़ पर चढ़ कर बैठ गया.
हे-हे-हे-हे! यह गरज सिंह का इलाका है. उसे यह खबर मिलते देर नहीं लगेगी कि महाराज उसके अड्डे के पास पहुंच चुके हैं. जब तक महाराज को अपनी आंखों से मौत के घाट उतरते न देख लूं, मुझे चैन नहीं आयेगा.


और सचमुच, उसी समय, खटारा खंडहर में —
छज्जू, साल भर बाद आज नहाने का मन कर रहा है. ज़रा झील से एक लोटा पानी तो ले आ.
कैसी बातें कर रहे हैं, सरदार? इतनी जल्दी-जल्दी मत नहाया कीजिए. कहीं आपको जुकाम हो गया तो?
चुप बे बेवकूफ! मैं तेरे जैसा गंदा नहीं हूं! अब जल्दी से पानी ले कर आ!
बस... अभी गया... और अभी आया, सरदार!
ज्यों ही छज्जू बाहर आया—
ऐं ??? कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा !!!
फिर वह उलटे पैर भीतर भागा...
...और—
सरदार! सरदार! राजा हड़बड़ सिंह... खंडहर के बाहर... बिलकुल अकेला!
क्या? सच??


अगले ही क्षण डाकुओं ने राजा हड़बड़ सिंह को घेर लिया.
क-क-कौन हो तुम?
तेरी मौत! डाकू गरज सिंह!!
ग-ग-गरज सिंह! बाप रे!!
हा-हा-हा-हा! जब गीदड़ की मौत आती है तो वह शहर की तरफ भागता है! जब तेरी मौत आयी तो तू खुद ही जंगल की तरफ, हमारे अड्डे पर चला आया! हा-हा-हा-हा!
पेड़ पर बैठा हुआ मंत्री सब देख रहा था.
हा-हा-हा-हा! आखिर मेरी योजना कामयाब रही! महाराज हर दफा किसी न किसी तरह बच कर निकल जाते थे. पर आज किस्मत इनका साथ नहीं देने वाली! अब जल्दी ही मैं राजा बन जाऊंगा!
ह-ह-हमें छोड़ दो! आखिर हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?
बहुत कुछ!
तू गरीबों की मदद करता है. काला धंधा करनेवालों को देश से निकाल देता है. अत्याचारियों और भ्रष्टाचारियों को कोड़े लगवाता है. अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा देता है.
पर उससे भी बुरी बात तो यह है कि तूने अपनी सेना को खिला-खिला कर सांड की तरह ताकतवर बना रखा है! तू अपने सिपाहियों को चोर-डाकुओं को पकड़ने का खास प्रशिक्षण दिलवाता है!


इसीलिए हम बेचारे पतले- दुबले, मरियल डाकू उन हाथियों का मुकाबला नहीं कर पाते. और तेरे राज्य के लोगों को अपने घरों में चोरी-डाके का डर नहीं रहता.
मैंने खुद तेरे राज्य में कई बार डाका डालने की कोशिश की, पर हर दफा नाकामयाब रहा. अगर तू जिंदा रहा तो मैं और मेरा गिरोह जरूर भूखे मर जायेंगे. इसलिए तेरा मरना जरूरी है!
वैसे भी, आज के जमाने में तुझ जैसे न्यायप्रिय, ईमानदार, दयालु और जनता का भला चाहनेवाले राजा को जीने का कोई हक नहीं... कोई हक नहीं... कोई हक नहीं...!!
राजा हड़बड़ सिंह जान गया कि अब डाकू गरज सिंह से प्राणों की भीख मांगने का कोई फायदा नहीं.
ठीक है! अगर तुम हमें मारना ही चाहते हो तो मार दो!
अब की है तूने कुछ अक्ल की बात! बोल, तेरी आखिरी इच्छा क्या है?
मरने से पहले हम गाना गाना चाहते हैं.
गाना???
ठीक है! शौक से गा!
?
ऐं!
?
?


और राजा लहक-लहक कर गाने लगा—
?
!!
!?
ओऽऽ तेरी दोस्ती मेरा प्यार... तेरी दोस्ती मेराऽऽ प्यार ऽ
?
हे भगवान! यह गाना है कि रोना?
लेकिन राजा का गाना सुन कर गरज सिंह के चेहरे के भाव तेज़ी से बदलने लगे.
तेरी...
...दोस्ती...
...मेरा...
...प्यार...
ठहरो! यह गाना तुमने कहां से सीखा?
तेरी दोऽस्ती...?


इस गाने के साथ कई पुरानी यादें जुड़ी हैं! यह गाना बचपन में हम और हमारा जिगरी दोस्त गज्जू मिल कर गाया करते थे.
तेरी दोस्ती मेरा प्याऽर!
एक दिन हम दोनों मेले में घूमने गये. अचानक मेले में जोर का तूफान आ गया और मेले की भीड़भाड़ में हम एक-दूसरे से बिछुड़ गये.
गज्जूऽ!
हम तो तूफान थमने के बाद किसी तरह घर पहुंच गये, पर उस दिन के बाद बहुत ढूंढ़ने पर भी गज्जू का कहीं कोई पता नहीं चला.
चुप हो जा, बेटा... चुप हो जा...
(सुबक! सुबक!)
तब से जब भी हमें अपने जिगरी दोस्त की याद आती है तो हम यही गाना गुनगुनाते हैं! मरने से पहले हमने सोचा कि चलो, अपने प्यारे दोस्त को आखिरी बार और याद कर लें!
अगले ही पल गरज सिंह की आंखों से आंसुओं की धारा फूट निकली.
तो तू हड़बू है...! मेरा प्यारा दोस्त हड़बू!
हड़बू! तूने मुझे पहचाना नहीं? मैं हूं गज्जू... तेरा बिछुड़ा हुआ दोस्त...!

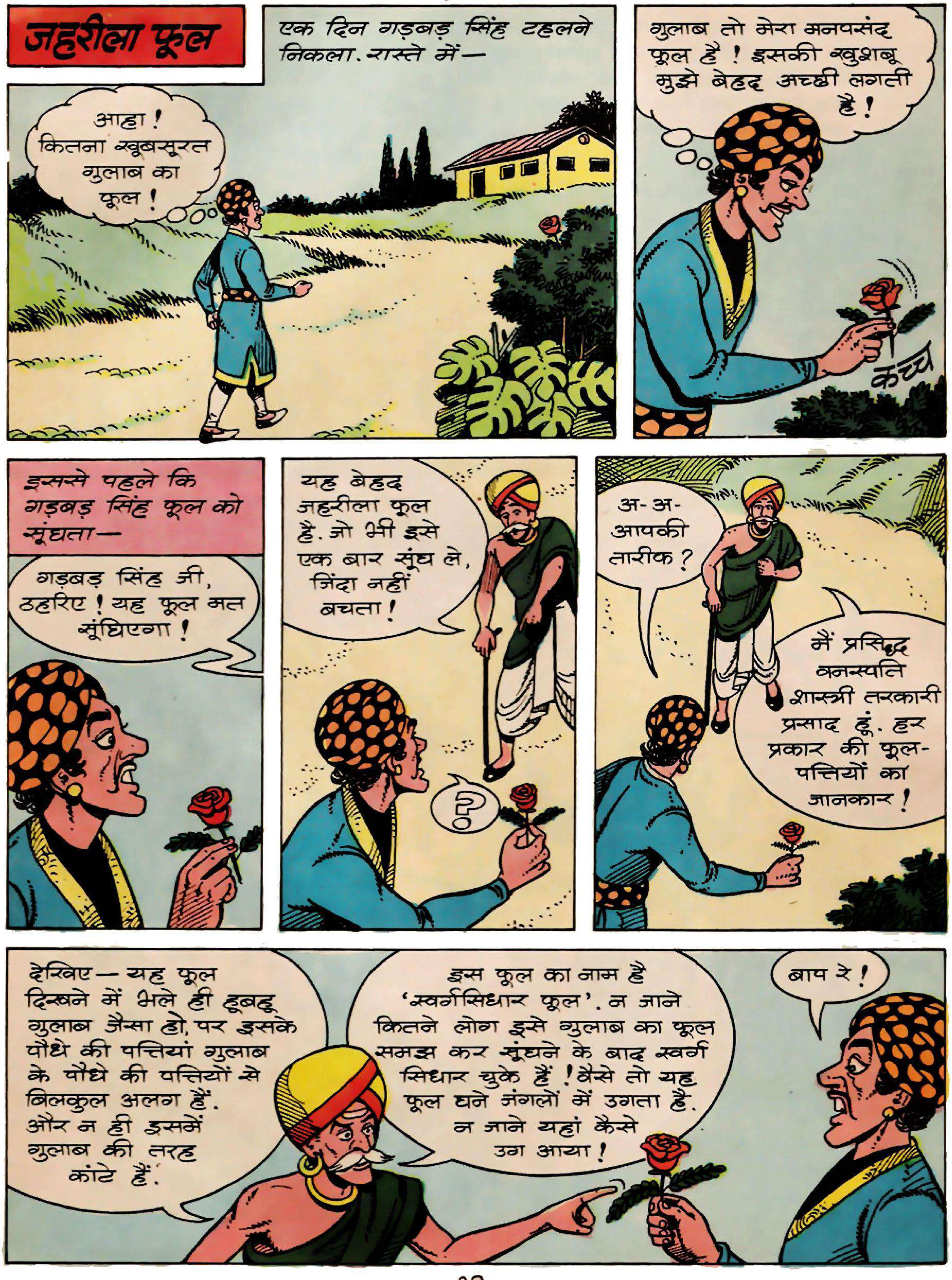

मेले में तूफान आने के बाद मैं भीड़ में भटक गया था. मुझे एक आदमी ने बचाया. बाद में पता चला कि वह राज्य का सबसे बड़ा डाकू धमाका सिंह है. वह मुझे अपने साथ ले गया.
रो मत बच्चे, मेरे साथ चल. तेरी जिंदगी बना दूंगा.
ऊं-ऊं-ऊं... हड़बू ऽऽऽ!
उसने मुझे पाल-पोस कर बड़ा किया. उसके मरने के बाद मैं गिरोह का सरदार बन गया.
सरदार गरज सिंह की जय!!
सच? तू गज्जू है? हमारा दोस्त!?
हड़बू! प्यारे हड़बू!
मारे गये! ये दोनों तो बचपन के बिछुड़े हुए दोस्त निकले.
हड़बू!... (सुबक! सुबक!) अब हम कभी जुदा नहीं होंगे... (सुबक...)
गज्जू! (सुबक! सुबक!)


तभी गरज सिंह के एक आदमी की नजर पेड़ पर छिपे बैठे मंत्री पर पड़ गयी.
ऐं? वह कौन है?
और फिर —
धांय
ईSSS!
किस पर गोली चलायी तुमने?
पेड़ पर कोई छिपा बैठा था, सरदार! जरूर हमारे किसी दुश्मन का जासूस है यह!
मर गया रेऽ!
धम्म
गड़बड़ सिंह...?!


?
नहीं गज्जू, यह किसी दुश्मन का जासूस नहीं. यह तो हमारा वफादार मंत्री है. यह हमारे लिए फल तोड़ने गया था. पर हमें तुम लोगों के चंगुल में देख कर जरूर पेड़ पर बैठा हमें छुड़ाने की तरकीब सोच रहा होगा!
है न, गड़बड़ सिंह?
ह-हां, महाराज!
धन्यवाद, गड़बड़ सिंह! आज तुम्हारी वजह से हमारा बरसों का बिछुड़ा हुआ दोस्त मिल गया! अगर तुम हमें इस ओर घुमाने न लाये होते तो शायद यह पुनर्मिलन कभी न हो पाता! राजमहल पहुंचने के बाद हम तुम्हें पुरस्कारों से लाद देंगे.
ध-धन्यवाद महाराज!
मुझे भी माफ कर देना, हड़बू! मैंने तुम्हें वह धमकी भरी चिट्ठी भिजवायी और इतने दिनों से तुम्हारी जान लेने की कोशिशों में लगा रहा. आज से मैं और मेरे गिरोह के लोग शरीफ आदमियों की जिंदगी बसर करेंगे!...
...और आज के बाद कोई तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकेगा!
?


धन्यवाद, दोस्त! अब तुम हमारे साथ नादानपुर चलो. तुम और तुम्हारे साथी वहीं रहेंगे. तुम्हें हम अपने विशेष सलाहकार का पद देंगे. तुम्हारे साथियों को भी नौकरियां दिलवा देंगे!
जरूर!
राजा हड़बड़ सिंह की जय!!


और फिर—
तेरी दोस्ती... मेरा प्यार!
हाय...! राजगद्दी फिर गयी हाथ से...!
समाप्त


जहरीला फूल
एक दिन गड़बड़ सिंह टहलने निकला. रास्ते में—
आहा! कितना खूबसूरत गुलाब का फूल!
गुलाब तो मेरा मनपसंद फूल है! इसकी खुशबू मुझे बेहद अच्छी लगती है!
कच्च
इससे पहले कि गड़बड़ सिंह फूल को सूंघता—
गड़बड़ सिंह जी, ठहरिए! यह फूल मत सूंघिएगा!
यह बेहद जहरीला फूल है. जो भी इसे एक बार सूंघ ले, जिंदा नहीं बचता!
?
अ-अ-आपकी तारीफ?
मैं प्रसिद्ध वनस्पति शास्त्री तरकारी प्रसाद हूं. हर प्रकार की फूल-पत्तियों का जानकार!
देखिए—यह फूल दिखने में भले ही हूबहू गुलाब जैसा हो, पर इसके पौधे की पत्तियां गुलाब के पौधे की पत्तियों से बिलकुल अलग हैं. और न ही इसमें गुलाब की तरह कांटे हैं.
इस फूल का नाम है 'स्वर्गसिधार फूल'. न जाने कितने लोग इसे गुलाब का फूल समझ कर सूंघने के बाद स्वर्ग सिधार चुके हैं! वैसे तो यह फूल घने जंगलों में उगता है. न जाने यहां कैसे उग आया!
बाप रे!


एकाएक गड़बड़ सिंह के दिमाग में एक तरकीब कौंधी—
महाराज हड़बड़ सिंह को भी गुलाब के फूल बहुत पसंद हैं. अगर यह फूल मैं उन्हें सुंघा दूं तो वे भगवान को प्यारे हो जायेंगे और फिर मैं राजा बन जाऊंगा! हे-हे-हे!
आपने मेरी जान बचायी. मैं जिंदगी भर आपका एहसानमंद रहूंगा, सरकारी प्रसाद जी!
सरकारी प्रसाद नहीं, मेरा नाम तरकारी प्रसाद है. लेकिन आप यह फूल क्यों ले जा रहे हैं?
अ... मैं इसे शहर के चौराहे पर रखवाऊंगा, ताकि हमारे राज्य की जनता इसे अच्छी तरह देख ले और कभी भी गुलाब के धोखे में इसे न सूंघे.
महाराज सच ही कहते हैं, गड़बड़ सिंह जी! आप महान हैं! आपको राज्य की जनता का कितना खयाल है!!
गड़बड़ सिंह फूल ले कर राजा हड़बड़ सिंह के महल पहुंचा.
महाराज कहां हैं?
शाही बगीचे में!


शाही बगीचे में—
हाय ! सब तरह के फूल खिले हैं. मगर एक भी गुलाब का फूल नहीं खिला !
तभी—
महाराज ! महाराज ! यह देखिए, मैं आपके लिए क्या लाया...
अरे वाह ! गुलाब का फूल ! तुम तो हमारे मन की बात पढ़ लेते हो, गड़बड़ सिंह ! हम सुबह से गुलाब का फूल सूंघने को तरस रहे थे !
यह लीजिए !
अचानक—
अरे बाप रे !
क्या हुआ महाराज ? फूल लीजिए न !
भागो, गड़बड़ सिंह ! तुम्हारे पीछे मधुमक्खियां ! लगता है इन्हें भी तुम्हारा फूल बहुत पसंद आया है !
ई SSSS !
बचाओ !


लेकिन अगले ही पल—
आह!
ऊंह!
आऽ!
अरे गड़बड़ सिंह, फूल दूर फेंक दो! वरना मधुमक्खियां तुम्हारा पीछा छोड़नेवाली नहीं!
मर गया!
और फिर मधुमक्खियां फौरन फूल की तरफ लपकीं...
...लेकिन उनको यह समझते देर न लगी कि फूल जहरीला है.
?
अगले ही पल—
अरे...! मधुमक्खियां तो फूल छोड़ कर चली गयीं!!


राजा हड़बड़ सिंह को फूल पर बड़ा गुस्सा आया. वह फूल के पास पहुंचा और—
पाजी ! बदमाश ! दुष्ट फूल ! तू कितना बुरा है !!
देख, तेरी वजह से आज हमारे प्यारे गड़बड़ सिंह की क्या हालत हो गयी. कितनी बुरी तरह सूज गया है वह !
हम तुझे नहीं छोड़ेंगे !
जूते से कुचले जा कर बेचारे फूल की चटनी बन गयी.
गड़बड़ सिंह को उठाकर महल में लाया गया और उसके इलाज के लिए राजवैद्य को भी बुलावा भेजा गया.
तुम कितने अच्छे हो, गड़बड़ सिंह ! हमारे लिए गुलाब का फूल लाने की तुम्हें कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी ! हमें नहीं मालूम था कि गुलाब का फूल इतना खतरनाक भी हो सकता है !
आज से हम कसम खाते हैं कि भविष्य में कभी गुलाब का फूल नहीं सूंघेंगे !!
हाय ! राजा बनने का मेरा सपना फिर धूल में मिल गया...!
समाप्त